IMAGINATIVE INK PUBLICATIONS

Estd Year: 2024

2025

IIP: WORLD JOURNAL OF HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES

VOLUME -1 , ISSUE - IV

OCTOBER - DECEMBER 2025

Editor-in- Chief

DR. S. S. MASKE

WWW.IIPUBLICATIONS.COM

ABOUT US

IIP: World Journal of Humanities and Social Sciences (IIP: WJHSS) is an international, peer-reviewed, open-access journal that publishes original research, reviews, case studies, and conference papers in the fields of humanities and social sciences. It welcomes interdisciplinary work across subjects like sociology, psychology, education, literature, law, history, economics, and more. Published by Imaginative Ink Publications, the journal provides a platform for global scholars to share impactful research and promote academic dialogue. With a commitment to open access, ethical publishing, and scholarly excellence, IIP: WJHSS ensures wide visibility and accessibility of all published work.

IIP:WJHSS

WWW.IIPUBLICATIONS.COM

Index

Sr. No.	Paper Title	Name	Page No.	Link
1	21वीं सदी के हिन्दी साहित्य में चित्रित नारी जीवन	डॉ. कुसुम मेघवाल	1583–1586	
2	21वीं सदी के हिंदी उपन्यास साहित्य में चित्रित नारी जीवन	प्रो. (डॉ.) सविता शिवलिंग मेनकुदळे	1587–1590	
3	अजय नावरिया की कहानी 'पटकथा' में नारी समस्या	डॉ. प्रदीप माणिकराव शिंदे	1591–1594	
4	"अपने अपने पिंजरे" आत्मकथा में चित्रित दलित जीवन	डॉ. तांबोळी एस.बी.	1595–1599	
5	आधुनिक शिक्षित एवं आत्मनिर्भर नारी : 'शकुंतिका' उपन्यास के संदर्भ में	प्राचार्य, डॉ. आर. पी. भोसले	1600–1603	
6	21वीं सदी की हिंदी कविता में चित्रित नारी-जीवन (सोनू यशराज की कविताओं के विशेष संदर्भ में)	प्रो. (डॉ.) प्रवीणकुमार न. चौगुले	1604–1609	
7	'नागफनी' में चित्रित नारी जीवन	प्रो.(डॉ.) एम.जे. शिवदास	1610–1612	
8	'21 वीं सदी के हिंदी उपन्यास में चित्रित नारी जीवन'	प्रो. (डॉ.) नितीन हिंदुराव कुंभार	1613–1615	
9	हिंदी सिनेमा में नारी के बदलते आयाम	डॉ. बाळासाहेब बळवंत	1616–1618	
10	नारी का 'क्वीन' होने तक का सफ़र	डॉ. प्रशांत नलवडे	1619–1621	
11	'लापता लेडीज़': स्त्री अस्मिता की पहचान का सशक्त सिनेमाई विमर्श	डॉ. वैशाली विठ्ठल खेडकर	1622–1624	
12	मिथिलेश्वर कृत 'यह अंत नहीं' उपन्यास में चित्रित नारी जीवन	डॉ. संदीप जोतिराम किर्दत	1625–1630	
13	इक्कीसवी सदी का हिंदी साहित्य और हिंदी सिनेमा में चित्रित नारी	डॉ. उत्तम राजाराम आळतेकर	1631–1636	
14	निर्मला पुतुल के काव्य में व्यक्त नारी की संवेदना	प्रा. मारुती दत्तात्रय नायकू	1637–1642	
15	२१ वीं सदी के हिंदी साहित्य में चित्रित नारी जीवन	डॉ. गोरखनाथ किर्दत	1643–1645	
16	सिनेमा में नारी	डॉ. अर्जुन ताना‍जी कांबळे	1646–1650	
17	'12 वीं फेल' सिनेमा की प्रेरणादायी नायिका: श्रद्धा	डॉ. परसराम रामजी रगडे	1651–1654	
18	21वीं सदी की हिंदी कविता में चित्रित नारी जीवन	डॉ. संगिता दिपक माळी	1655–1658	
19	नीरजा माधवकी कहानियों में चित्रित नारी जीवन	डॉ. वंदना सोपान मोहिते	1659–1661	
20	२१ वीं सदी के हिन्दी कथा साहित्य में चित्रित नारी जीवन	डॉ. रोहिणी रामचंद्र साळवे	1662–1665	
21	'देवदास' फिल्म की नायिका 'पारो' और 'चंद्रमुखी' का मानसिक द्वंद्व ('देवदास' 2002 ई. के संदर्भ में)	डॉ. माधव राजप्पा मुंडकर	1666–1669	
22	21 वीं सदी के हिंदी सिनेमा में चित्रित नारी जीवन	डॉ. बलवंत जेऊरकर	1670–1673	
23	21 वीं सदी की हिंदी महिला आत्मकथाओं में चित्रित स्त्री विमर्श	डॉ॰ अशोक मोहन मरळे	1674–1677	
24	इक्कीसवीं सदी के हिन्दी सिनेमा में चित्रित स्त्री	डॉ. झेलम चंद्रकांत झेंडे	1678–1682	
25	21 वीं सदी की गीतांजलि श्री के उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन	डॉ. कुंदा मुकुंदराव निंबालकर	1683–1686	
26	21 वीं सदी की हिंदी कविता में स्त्री: संवेदना और संघर्ष	डॉ. ममता माली	1687–1690	
27	21वीं सदी के भारतीय सिनेमा में नारी सौंदर्य का स्वरूप फीमेल गेज़ का विश्लेषण	डॉ. सुशील सोमवंशी, डॉ. संगीता सोमवंशी	1691–1696	
28	21वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में चित्रित नारी-जीवन	डॉ. भूषण सदानंद घरत	1697–1700	

IIP: WJHSS
IIP
World Journal of Humanities and Social Sciences

An Online Peer-Reviewed / Refereed Journal
Vol: 01 No. Issue IV, (October-December) (2025)
Impact Factor: IIFS: 5.75
ISSN: 3107-6661 (Online)

'21 वीं सदी के हिंदी उपन्यास मेंचित्रित नारी जीवन'

प्रो. (डॉ.)नितीन हिंदुराव कुंभार
हिंदी विभाग डॉ.पतंगराव कदम महाविद्यालय, रामानंदनगर(बुर्ली)
तह- पलूस, जि.सांगली(महाराष्ट्र) पिन 416308

Article Info

Article History:
Received: 15th Dec 2025
Accepted: 18th Dec 2025
Published: 20th Dec 2025

Keywords:

समाज, यथार्थ, नारी,स्वतंत्रता,शोषण, सामाजिक सुरक्षा

ABSTRACT

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में ही वह विकसित होता है। इनमें से कुछ - एक प्रतिभा के बल पर अपने आसपास के वातावरण से, तत्कालीन सामाजिक परिवेश से जो कुछ ग्रहण करता है, अनुभव करता है या भुक्तभोगी होता है उन्हें स्वाभाविक रुप से साहित्य के रुप में अभिव्यक्त करता है उन्हें 'साहित्यकार' कहा जाता है I साहित्यकार समाज का ही एक अभिन्न अंग होता है। अतः स्पष्ट है कि समाज, साहित्य और साहित्यकार का घनिष्ठ संबंध है। कोई भी साहित्यकार या उसके द्वारा अभिव्यक्त साहित्य तत्कालीन सामाजिक परिवेश से प्रभावित होता है।समाज का प्रतिबिंब साहित्य रुपी दर्पण में पड़ता है I इसलिए साहित्य को 'समाज का दर्पण' कहा जाता है। साहित्य समाज के यथार्थ का प्रतिबिंब होता है।

स्वतंत्रता के बाद 21वीं सदी तक पहुँचते – पहुँचते समाज के हर क्षेत्र में बदलाव आ गया है I हमारा समाज दिखावे और खोखलेपन से ग्रस्त हो गया है। पूरा समाज जीवन मिथ्या आडम्बरों में डूब गया है I आत्मीयता की बुनियाद पर निर्माण होनेवाले सामाजिक संबंधों में आत्मसुखवादिता आ गयी है I इसी दौर में आज भी नारी अपनी स्वतंत्रता और अधिकारों के लिए दहलीज पर ही खड़ी है।

भारतीय समाज की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक परंपरा बहुत पुरानी रही है।इसमें नारी को देवी का रुप मानकर सम्मान देने की परंपरा थी I मातृत्व के कारण उसे पूजनीय माना जाता था I वैदिक युग तक नारी को समाज में सम्मान प्राप्त था I कालांतर में मनुवादी संस्कृति का जोर और परकीय आक्रमण आदि के कारण नारियों का गौरव धीरे – धीरे छीनते हुए उसका जीवन नारकीय बना दिया।धार्मिक रुढ़ियों का प्रभाव समाज पर ज्यादा होने के कारण बहुत सारे नियम एवं शर्तें बनाई गयी।इसमें अधिकांश नियम नारी को लक्ष्य बनाकर बनाए गए उसे दया, क्षमा और करुणा की मूर्ति बनाकर सब कुछ सहने के लिए विवश कर दिया। भारतीय समाज हमेशा से ही पुरूष प्रधान रहा है। हमारी सांस्कृतिक मान्यताएँ, रूढ़ियाँ, परंपराएँ और रीति-रिवाज समाज में नारी के स्वतंत्र अस्तित्व का विरोध करती रही हैं। इसलिए सदैव ही नारियों को पुरूषों द्वारा दबाया जाता रहा है। 21वीं सदी के उपन्यासकार नारियों की इसी स्थिति का चित्रण अपने उपन्यासों में बखूबी कर रहे हैं।

Plagiarism Check Report:
Date of Report: Dec 17, 2025
Similarity Index: 4%
Remarks: No significant matching text. All citations and matches are properly referenced. The manuscript is considered original.

Copyright © 2025 The Author(s). This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License, (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.

How to Cite: Kumbhar, N. H. (2025). 21वीं सदी के हिंदी उपन्यास में चित्रित नारी जीवन. *IIP: World Journal of Humanities and Social Sciences (IIPWJHSS)*, 1(VI), 1613–1615.

आलेख :-

21वीं सदी तक पहुँचते – पहुँचते नारी को सामाजिक सुरक्षा और सम्मान प्रदान करने के अनेक उपाय किए गए। उसे शिक्षा ग्रहण करने की पूरी स्वतंत्रता दी गयी I कुप्रथाओं के विरुद्ध सरकार तथा कानून के द्वारा प्रतिबंध लगाए गए। पुरुषों के समान नारी को अधिकार देने का प्रावधान किया गया है। अतः एक ओर नारी को सामाजिक सम्मान, सुरक्षा और समानता देने के प्रयास किए जा रहे हैं तो दूसरी ओर आज भी एक आम भारतीय का विचार वही दक़ियानूसी ही है I जिसमें नारी को सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा नहीं है I यह प्रवृत्ति गाँवों तथा पिछड़े तबकों में अधिक पायी जाती है I समाज की इस पुरातनपंथी मानसिकता पर गौर करती हुई डॉ. जूही शुक्ला कहती है, ''आज का समय बदल चुका है I स्त्रियों ने समाज के प्रत्येक क्षेत्र में अपना दखल दे रखा है। वे सफल राजनीतिज्ञ, उद्योगपति एवं कार्पोरेट जगत में जमकर खड़ी है I लेकिन फिर भी भारतीय ग्रामीण अंचलों में स्त्रियों के लिए जीवन अभी भी बहुत कठिन है I उन्हें अपनी प्राथमिक जरुरतों के लिए भी संघर्ष करना पड़ रहा है। ये अभी भी समाज की बीमार मानसिकता के दंश को झेल रही है I यह अभी भी अलग से देखी जानेवाली जीव है I इन्हें निर्णय लेने एवं परिवार की आय से हिस्सा प्राप्त करने का अधिकार नहीं है I चाहे स्त्री किसी भी आर्थिक संवर्ग की हो वह अभी भी पुरुषों पर आश्रित है।''1

अतः स्पष्ट है कि आज के युग में जिसे 'नारी स्वतंत्रता का युग' कहा जाता है, उसमें भी नारी को प्रताड़ित होना पड़ रहा है। हिंदी उपन्यासकारों ने नारी की इसी दुर्दशा, पराधीनता, परवशता, असहायावस्था का ही अधिक चित्रण किया है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद शिक्षित व सक्षम महिलाओं के दृष्टिकोण में बदलाव आया। वे परिवार व समाज में अपनी भूमिका को लेकर शारीरिक व मानसिक रूप से संघर्ष करती रही। स्वतंत्रता की प्राप्ति के बाद स्त्रियों के स्वरूप में होने वाले परिवर्तनों के संदर्भ में डॉ॰ वीरेंद्र सिंह लिखते हैं- "एक ओर जहाँ परिवार का परंपरागत स्वरूप टूटा, वहीं दूसरी ओर स्त्री स्वतंत्रता के कारण नवयुवक स्त्रियों के स्वरूप में परिवर्तन आया। जो स्त्रियाँ आजीविका के साधन स्वयं जुटाती थीं उनकी मानसिकता में धीरे-धीरे व्यापक परिवर्तन आया और इस प्रकार उन्होंने जीवन और चिंतन के स्तर पर पुरुषों के समान ही स्वयं को प्रस्तुत करने की कोशिश की"।2

21वीं सदी के उपन्यासों में चित्रित सभी स्त्रियाँ किसी न किसी प्रकार के शोषण चाहे वह सामाजिक हो, आर्थिक होया पारिवारिक हो, से पीड़ित दिखाई गई है। उपन्यासकार ने उनकी मानसिक एवं मनोवैज्ञानिक पीड़ा को अभिव्यक्ति देते हुए उनके अंतर्मन को खोल कर पाठक के समक्ष प्रस्तुत कर दिया है। नारियाँ आज भी अपने वजूद को बचाने के लिए और अपने अस्तित्व की लाज रखने के लिए संघर्ष करती हुई नजर आती है, क्योंकि इनके पीछे गाँव और परिवार के ही पुरुष घात लगाकर बैठे हैं तो जब इनकी रक्षा करने वाले हाथ ही इनका भक्षण करने को तैयार हो जाए तो फिर किससे उम्मीद की जा सकती है। 'भगवान दास मोरवाल' के उपन्यास 'बाबल तेरा देश में' की नारियाँ रीति-रिवाज एवं परंपराओं के कारण ही अनेक प्रकार की विषमताओं के दंश झेलने को मजबूर हैं।इसी उपन्यास का एक पात्र धनसिंह इसी स्थिति के संबंध में कहता है "इतनो आसान ना है रामचंदर अरे, तोहे तो सब मालूम है कि रीति-रिवाज, धर्म-कर्म, बिरादरी और कौम भी कोई चीज होबे है। बात जब घर में है चाहे जैसे मन करे सुलझा लोगे पर देहली पार करते ही आदमी का बस सू बाहर हो जावे है। मैने तो बहुत कोशिश करी है पर हदीस और सरीयत के आगे एक ना चली।"3.

'शेफाली के फूल' की सशक्त स्त्री पात्र सावित्री अपने गाँव की स्त्रियों को शिक्षित करने के लिए अपने घर में स्कूल खोलने का प्रयास करती है क्योंकि वह इस बात को भली भाँति पहचानती है कि स्त्रियों के शोषण का वास्तविक कारण उनका अशिक्षित होना है लेकिन उसकी इस कोशिश पर उसके पिता ठाकुर बजरंगी सिंह उसे इस तरह जवाब देते हैं, ''एक बात समझ लो, सावित्री स्कूल-फिस्कूल यहाँ कुछ नहीं खुलेगा, समझी तुम तो मेरे घर को अभी से अनाथ कर दे रही हो सो भी उनके लिए जिन्हें मैं दो कौड़ी के लिए भी महँगा मानता हूँ I''4वह कहती है,''हमारे गाँव अभी अट्ठारहवीं शताब्दी में ही सांस ले रहे हैं क्योंकि पुरूष जानता है कि यदि महिलाओं को पूर्ण स्वाधीनता, समानता, समस्तर प्रदान कर दिया गया तो उनकी दादागिरी कौन सहेगा''5

नारी शोषण का सबसे बड़ा रुप है उसका शारीरिक शोषण। विवेच्य उपन्यासों में अनेक नारियाँ इसी शोषण का शिकार बनती है। 'आछरी-माछरी' उपन्यास में आछरी दुष्ट तुलसापंत की हवस का शिकार बनती है और अपने ही परिवार द्वारा त्याग दी जाती है। स्त्रियों के शारीरिक शोषण की सबसे बड़ी विडंबना यह होती है कि दैहिक शोषण का शिकार भी वही बनती है और समाज और परिवार के कोपभाजन का शिकार भी वही बनती है। समाज में उसकी गलती ना होने पर भी उसी को गलत ठहराया जाता है।

ऐसा ही 'आछरी-माछरी' की पात्र आछरी के साथ होता है। समाज की सभी वर्गों, जातियों, धर्मों, तबकों की स्त्रियों की वेदना को अभिव्यक्ति देती हुई आछरी कहती है कि "वैसे भी दुनिया के दस्तूर हैं बेटे! वे मुझ जैसी औरत को ही नहीं दुनिया की हर औरत जात को दिन के उजाले की अपेक्षा रात के अंधेरे में देखना पसंद करते हैं। ताकि हर औरत का रास्ता एक अंधेरी गुफा की तरफ ही चलता चला जाए।''6 लेकिन आछरी अपने साथ हुए इस अन्याय के आगे झुकती नहीं है और परिवार के द्वारा त्याग दिए जाने पर भी वह हिम्मत नहीं हारती है और हौसला करके आगे बढ़ती है तथा एक दिन गाँव की प्रधान बनती है और गाँव की दूसरी औरतों के लिए प्रेरणा बनती है।

इस प्रकार21वीं सदी के हिंदी उपन्यासकारों ने नारी जीवन का यथार्थ चित्रण किया है।

निष्कर्ष:- 21वीं सदी के हिंदी उपन्यासकारों ने नारी के जीवन के विविध पहलुओं और उनकी समस्याओं को अत्यंत संवेदनशील तरीके से चित्रित किया है।आजादी के बाद स्त्री को पुरूषों के बंधन से मुक्ति प्रदान करने के लिए अनेक कानूनी अधिकार दिए गए परंतु महिलाओं में शिक्षा की कमी के कारण वे अपने इन अधिकारों के बारे में जागरूक ही नहीं हो पाई, प्रयोग करने की बात तो दूर की रही। शहरों की महिलाओं में कुछ जागरूकता है पर गाँवों में आज भी काफी महिलाएँ अशिक्षित हैं तथा विभिन्न प्रकार के शोषण की शिकार हैं, ग्रामीण स्त्री को स्वतंत्र अस्तित्त्व, सम्मान न होने से उसका शोषण परिवार और समाज में निरंतर हो रहा है। हिंदी उपन्यास वर्तमान नारी के बदलते विभिन्न रूपों को प्रस्तुत करते है। एक ओर वर्तमान हिंदी उपन्यास नारी के सशक्त होते विभिन्न प्रतिरूपों को उद्घाटित करते हैं तो वहीं दूसरी ओर उसके पथ-भ्रष्ट होते रूपों को भी पेश करते हैं।

संदर्भ सूची:-

1. डॉ.जूही शुक्ला, 'वर्तमान परिदृश्य और स्त्री रचनाकार', इलाहाबाद : आलोक प्रकाशन, प्र. सं. सन्2011 ई. आत्मकथन से उद्धृत, पृ. 7.
2. डॉ॰ यादव वीरेंद्र सिंह, 'हिंदी कथा साहित्य में पारिवारिक विघटन', सं. सन् 2010, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली पृ. 37.
3. भगवानदासमोरवाल 'बाबल तेरा देश में', सं. सन् 2004 पृ. – 441
4. विद्यावती दुबे : शेफाली के फूल, सं. सन् 2006 पृ. – 69
5. विद्यावती दुबेः शैफाली के फूल, सं. सन् 2006 पृ. – 146
6. हरिसुमन बिष्ट : आछरी-माछरी, सन् 2006 पृ. – 104